e-ISSN:2582 - 7219

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH

IN SCIENCE, ENGINEERING AND TECHNOLOGY

Volume 4, Issue 11, November 2021

INTERNATIONAL
STANDARD
SERIAL
NUMBER
INDIA

Impact Factor: 5.928

9710 583 466 9710 583 466 ijmrset@gmail.com www.ijmrset.com

International Journal Of Multidisciplinary Research In Science, Engineering and Technology (IJMRSET)

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 5.928|

| Volume 4, Issue 11, November 2021 |

|DOI:10.15680/IJMRSET.2021.0411008 |

हजारी प्रसाद द्विवेदी के उपन्यास -अनामदास का पोथा पर समीक्षात्मक शोध आलेख

महावीर सिंह
सहायक आचार्य, हिंदी विभाग, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, टोंक, राजस्थान

सार
दुबहर ब्लॉक के ओझवलिया गांव में पं अनमोल द्विवेदी के पुत्र व्योमकेश द्विवेदी कर जन्म 19 अगस्त 1907 को हुआ। जन्म के पश्चात ही इनके नाना जो जिले के बभनवली निवासी देवनारायण पांडेय ने एक कठिन एवं लम्बा अभियोग जीतकर विजय स्वरूप हजार रुपये प्राप्त किया जो अपने नाती को दे दिए। इस उल्लास में व्योमकेश हजारी प्रसाद हो गए जो अपने युग में हिंदी के प्रकांड विद्वान के रूप में प्रसिद्ध हुए।

डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी की शिक्षा-दीक्षा ग्रामीण विद्यालय रेपुरा से प्राइमरी एवं मिडिल की परीक्षा बसरिकापुर से उत्तीर्ण करने के बाद अपने चचेरे भाई विश्वनाथ द्विवेदी के साथ अपने पिता के पास पश्चिम बंगाल के फरीदपुर जिले में बरहमगंज स्थित एक निजी विद्यालय में दोनों भाइयों ने दाखिला लिया, जिसका माध्यम बंगला भाषा थी। कक्षा सात उत्तीर्ण हुए दोनों बालकों को बंगला भाषा का ज्ञान न होने से वहां तीसरी कक्षा में प्रवेश मिला। दोनों ने घोर परिश्रम कर बंगला भाषा का ज्ञान प्राप्त किया जिससे प्रधानाचार्य ने शीघ्र ही कक्षोन्नति कर इन्हें कक्षा छह में प्रवेश दे दिया। वर्ष 1921 में महात्मा गांधी ने स्कूल छोड़ो आंदोलन छेड़ दिया जिसके कारण विद्यालय बंद हो गया जिससे दोनों भाई गांव आ गए।

वहां से उच्च शिक्षा ग्रहण करने पंडित जी 1921 में ही काशी जाकर हिंदू विश्व विद्यालय में ज्योतिष में प्रवेश लिया। मालवीय जी के सान्निध्य में अत्यंत उच्च श्रेणी के परिक्षार्थी के रूप में 1929 में हजारी प्रसार द्विवेदी परीक्षा में सर्व प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुए। परीक्षा उत्तीर्ण कर जब मालवीय जी से आशीर्वाद लेने गए तो इनकी अलौकिक प्रतिभा का मूल्यांकन करके वे बोले-तुम हिन्दी के बहुत अच्छे विद्वान हो। रविन्द्रनाथ ठाकुर ने एक हिंदी अध्यापक मांगा है, उन्हें पत्र लिख देता हूं, चले जाओ। इस प्रकार मालवीय जी के माध्यम से हजारी प्रसाद प्रारंभ में ही उस धरातल पर पहुंचे जहां से उनकी कीर्ति पताका गगन में फहराने लगा। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी हिंदी के शीर्षस्थ साहित्यकारों में रहे। वे उच्चकोटि के निबन्धकार, उपन्यासकार, आलोचक, चिन्तक तथा शोधकर्ता रहे।

परिचय

विश्वभारती आदि के द्वारा द्विवेदी जी ने संपादन के क्षेत्र में पर्याप्त सफलता प्राप्त की । वाणभट्ट की आत्मकथा के साथ ही पुनर्नवा, चारूचन्द्रलेख, अनामदास का पोथा, जैसे ऐतिहासिक उपन्यास रहे। आचार्य जी कई वर्षों तक काशी नागरी प्रचारिणी सभा के उपसभापति, खोज विभाग के निदेशक तथा नागरी प्रचारिणी सभा के संपादक रहे। 1950 में बीएचयू में हिन्दी विभाग के अध्यक्ष एवं प्रोफेसर रहे। 1955 में वे प्रथम आफिशियल लैंग्वेज कमीशन के सदस्य चुने गए।1957 में पद्मभूषण से सम्मानित हुए।

डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी

उनको साहित्य एवं शिक्षा के क्षेत्र में महामहिम राष्ट्रपति द्वारा 1957 में पद्मभूषण से सम्मानित किया गया। 1958 में वे नेशनल बुक ट्रस्ट के सदस्य रहे। 1960 में पंजाब विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष और प्रोफेसर होकर चंडीगढ़ चले गए। 1968 में फिर बीएचयू में डायरेक्टर नियुक्त हुए। इसके बाद उत्तर प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी के अध्यक्ष हुए और फिर 19 मई 1979 में महानिर्वाण को प्राप्त हुए।हजारी प्रसाद के नाम से बने प्रवेश द्वार को ध्वस्त करा दिया।

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 5.928|

| Volume 4, Issue 11, November 2021 |

|DOI:10.15680/IJMRSET.2021.0411008 |

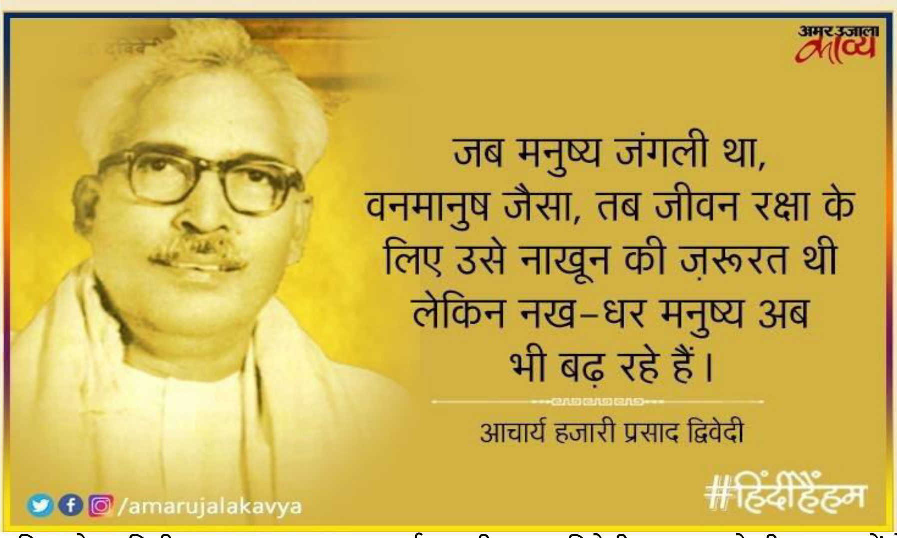

बलिया के अद्वितीय लाल पद्मभूषण आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी आज अपने ही जनपद में बेगाने होते जा रहे हैं। पंडित जी के गांव ओझवलिया को उनकी गरिमा एवं सम्मान के अनुरूप समग्र विकास करवाना चाहिए था लेकिन विकास तो दूर द्विवेदी जी के नाम पर न तो एक पुस्तकालय है और ना ही एक आदमकद मूर्ति की स्थापना ही हुई। हद तो तब हो गई जब दो सितंबर 2020 को एनएच-31 पर पूर्व में निर्मित आखिरी निशानी आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी स्मृति प्रवेश द्वार को नजदीकी ईंट भट्टा के मालिक ने साजिश के तहत जेसीबी से गेट का नींव खोदवाकर उसे ध्वस्त करवा दिया जिसके खिलाफ ग्राम प्रधान द्वारा दुबहर थाने में तहरीर दी गई लेकिन 10 माह बाद भी कोई कार्रवाई नहीं हुई। - सुशील कुमार द्विवेदी, प्रबंधक, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी स्मारक समिति।

हिंदी के शीर्षस्थ साहित्यकार एवं कालजयी रचनाकार आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का जन्मभूमि ओझवलिया आज अपने दुर्भाग्य पर आंसू बहा रहा है। जिले के प्रथम सांसद आदर्श गांव के रुप में चयन के पश्चात लोगों को कुछ उम्मीदें बंधी थी लेकिन वो भी छलावा साबित हुई। जिले के जनप्रतिनिधि एवं जिम्मेदार अधिकारी कभी भी आचार्य जी के पैतृक गांव की सुधि नहीं लेते।[1]

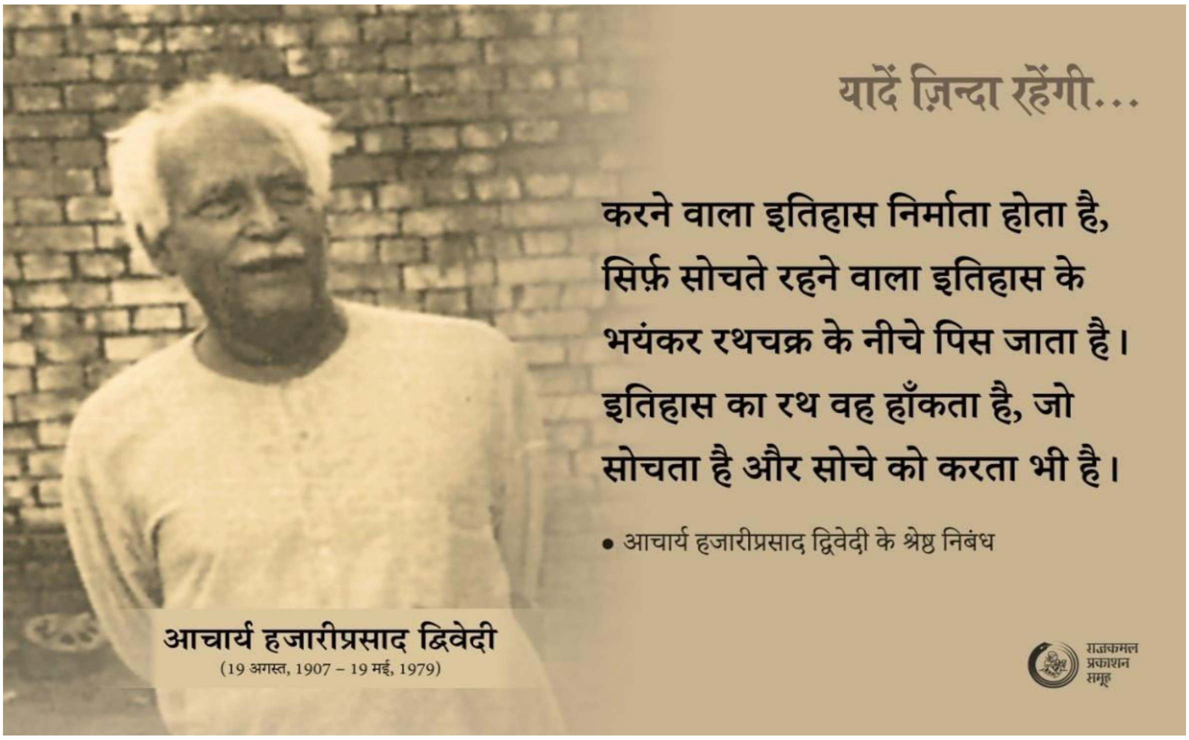

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 5.928|

| Volume 4, Issue 11, November 2021 |

|DOI:10.15680/IJMRSET.2021.0411008 |

अनामदास का पोथा आचार्य हज़ारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा लिखित एक उपन्यास है। इस उपन्यास में उपनिषदों की पृष्ठभूमि में चलती एक बहुत ही मासूम सी प्रेमकथा का वर्णन है। साथ ही साथ उपनिषदों की व्याख्या व समझने का प्रयास, मानव जीवन की विभिन्न परिस्थितियों में विचारों के मानसिक द्वंद्व व उनके उत्तर ढूंढने का प्रयास इस उपन्यास की महत्त्वपूर्ण विशेषताएँ व कहना चाहिए कि उपलब्धियाँ भी है।

इस उपन्यास में परिलक्षित लेखक का उपनिषद-ज्ञान व मानवीय मनोभावों को समझने की क्षमता व उनको अपनी कलम से सजीव कर देने की क्षमता निश्चित ही प्रशंसनीय है।

इस उपन्यास की पृष्ठभूमि छान्दोग्य उपनिषद में वर्णित कथा है जिसके अनुसार दो पक्षियों की वार्ता सुनकर राजा ने रैक्व नामक "पीठ खुजलाने वाले बैलगाड़ी वाले साधु" की महिमा जानी और उनकी शरण में जाकर ज्ञानयाचना की। साधु ने ज्ञान देने से मना कर दिया। तत्पश्चात् राजगुरुओं की सलाह से राजा पुनः वहां गए और भेंट के साथ अपनी पुत्री जाबाला को भी ले गए। जाबाला के सौंदर्य से प्रभावित हो रैक्व मान गए तथा उन्होंने राजा को ज्ञानवचन कहे जो कि छान्दोग्य उपनिषद में संकलित हैं।

लेखक प्रारंभ में यह कथा लिखते हुए अपनी आपत्ति जताते हैं कि इस कथा में कुछ अधूरा प्रतीत होता है ।[2]

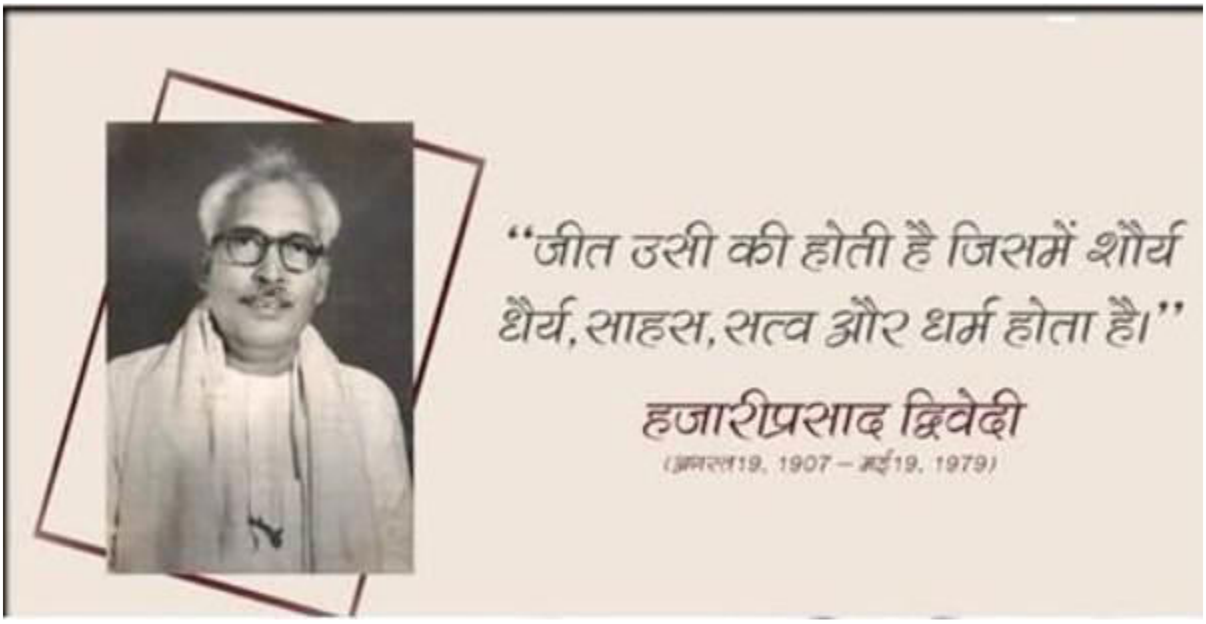

विचार - विमर्श

अनामदास का पोथा आचार्य हज़ारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा लिखित एक उपन्यास है। इस उपन्यास में उपनिषदों की पृष्ठभूमि में चलती एक बहुत ही मासूम सी प्रेमकथा का वर्णन है। साथ ही साथ उपनिषदों की व्याख्या व समझने का प्रयास, मानव जीवन की विभिन्न परिस्थितियों में विचारों के मानसिक द्वंद्व व उनके उत्तर ढूंढने का प्रयास इस उपन्यास की महत्त्वपूर्ण विशेषताएँ व कहना चाहिए कि उपलब्धियाँ भी है। इस उपन्यास में परिलक्षित लेखक का उपनिषद-ज्ञान व मानवीय मनोभावों को समझने की क्षमता व उनको अपनी कलम से सजीव कर देने की क्षमता निश्चित ही प्रशंसनीय है।

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 5.928|

| Volume 4, Issue 11, November 2021 |

|DOI:10.15680/IJMRSET.2021.0411008 |

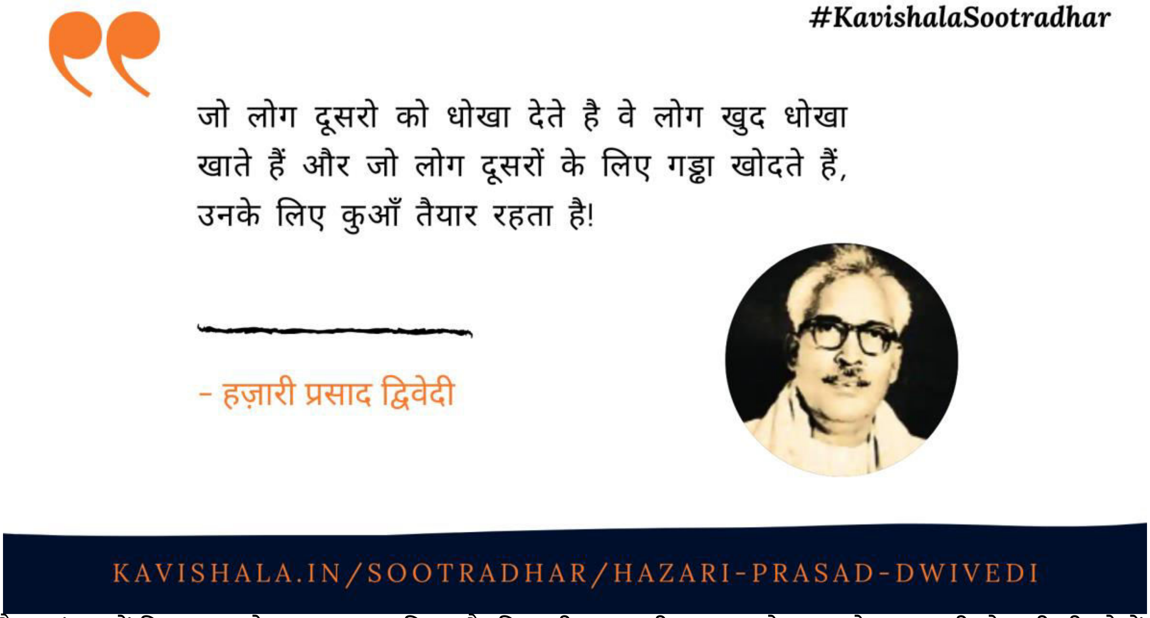

रैक्व जंगल में निवास करने वाला एक ऋषिपुत्र है, जिसकी माता की मृत्यु उसके जन्म के समय ही हो गयी थी। वेदों का कुछ ज्ञान प्रदान कर बाल्यकाल में ही उसके पिता भी चल बसे। पिता प्रदत्त ज्ञान से उत्पन्न जिज्ञासा को स्वानुभव से स्पष्ट करने की चेष्टा में जंगल में भटकता हुआ यह बालक किशोरावस्था में पहुंचते पहुंचते तक आसपास के गांवों में संन्यासी बालक के रूप में जाना जाने लगता है।

एक दिन एक भयानक तूफान आता है, जिसे देख बालक वायु तत्व को सर्वशक्तिमान मानने लगता है। तूफान थमने पर वह जंगल निकलता है। अहोभाव से वायुशक्ति से हुए विनाश का अवलोकन करते हुए उसे एक दुर्घटनाग्रस्त बैलगाड़ी दिखती है, जिसके पास ही दो मानव शरीर पड़े हैं। एक की मृत्यु हो चुकी है। लेकिन दूसरा, यह जीवित तो है लेकिन बेहोश है। लेकिन यह क्या .... यह तो कोई विचित्र प्राणी है - इतने सुंदर लंबे मुलायम केश, इतनी सुंदर इतनी बड़ी मृग सरीखी आंखें, इतना सुंदर मुख? नहीं नहीं यह मानव नहीं हो सकता अवश्य ही यह कोई देवलोक का प्राणी है। इतने में घायल राजकुमारी को होश आ जाता है।[3]

यहां से शुरु होती है बैलगाड़ी वाले ऋषिपुत्र की कथा, जिसकी पीठ में रह रह कर खुजली उठती है जो शांत ही नहीं होती, या यूं कहें कि कथा के अंत में ही शांत होती है।

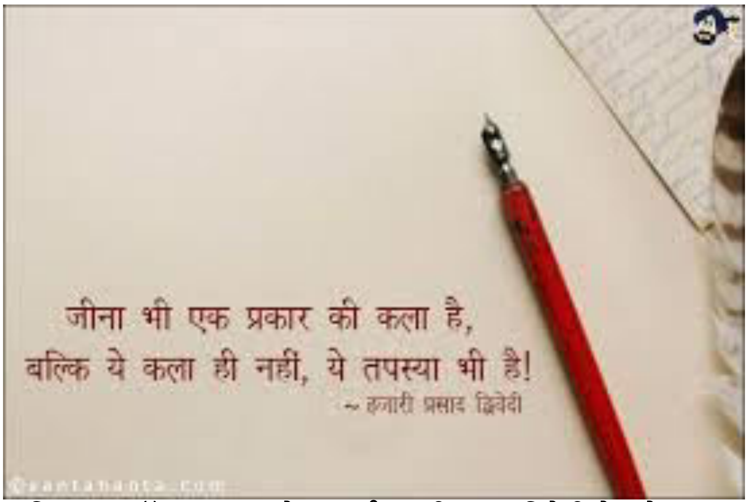

साहित्यकार डॉ. जयप्रकाश ने आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी से जुड़े संस्मरण सुनाते हुए उनके सरल सहज व्यक्तित्व की चर्चा की। उन्होंने बताया कि 'अनामदास का पोथा' उपन्यास में उन्होंने अपने नाम की व्यवस्था की थी। वे धर्म के अविरोधी भाव के पोषक थे।

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 5.928|

| Volume 4, Issue 11, November 2021 |

|DOI:10.15680/IJMRSET.2021.0411008 |

अध्यक्षीय संबोधन में डॉ. हिदी संस्थान के कार्यकारी अध्यक्ष सदानन्द प्रसाद गुप्त ने कहा कि आचार्य भारतीय परंपरा में संलग्न रचनाकार थे। द्विवेदी जी सारे संसार का एक मानव धर्म मानते थे। संस्कृति, अपभ्रंश, प्राकृत के साहित्य का प्रभाव उनकी रचनाओं में देखने को मिलता है।[4]

परिणाम

ऐतिहासिक काल पर आधारित होने पर भी इनमें ऐतिहासिक तथ्यों का संग्रह नहीं है वरन् इतिहास की घटनाओं और तथ्यों की अपेक्षा साहित्यिक व सांस्कृतिक साम्रगी को कथानक का आधार बनाया है. अनामदास का पोथा में उपनिषदों में वर्णित कथा है ।आपके उपन्यास आपकी मौलिक प्रतिभा व कल्पना द्वारा लिखे गये हैं । 'अनामदास का पोथा उपन्यास में उन्होंने अपने नाम की व्यवस्था की थी। वे धर्म के अविरोधी भाव के पोषक थे।संस्कृति पृष्ठभूमि पर आधारित ये उपन्यास द्विवेदी जी की गंभीर विचार शक्ति के प्रमाण हैं।अनामदास का पोथा आचार्य हज़ारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा लिखित एक उपन्यास है। इस उपन्यास में उपनिषदों की पृष्ठभूमि में चलती एक बहुत ही मासूम सी प्रेमकथा का वर्णन है। साथ ही साथ उपनिषदों की व्याख्या व समझने का प्रयास, मानव जीवन की विभिन्न परिस्थितियों में विचारों के मानसिक द्वंद्व उनके उत्तर ढूंढने का प्रयाइस उपन्यास की महत्त्वपूर्ण विशेषताएँ व कहना चाहिए कि उपलब्धियाँ भी है।[5]

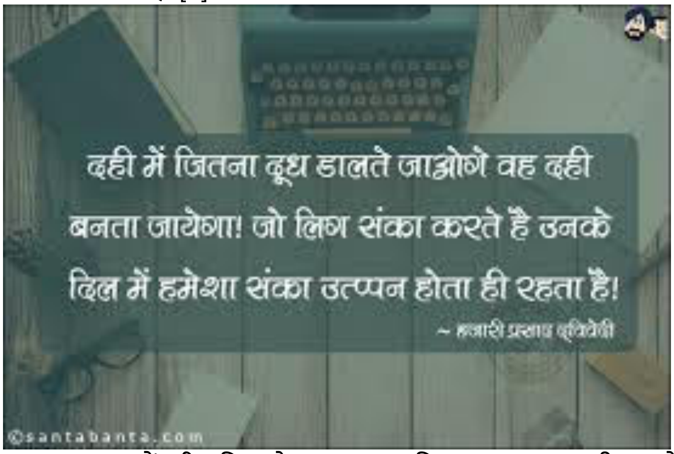

इस उपन्यास में परिलक्षित लेखक का उपनिषद-ज्ञान व मानवीय मनोभावों को समझने की क्षमता व उनको अपनी कलम से सजीव कर देने की क्षमता निश्चित ही प्रशंसनीय है।इस उपन्यास की पृष्ठभूमि छान्दोग्य उपनिषद में वर्णित कथा है जिसके अनुसार दो पक्षियों की वार्ता सुनकर राजा ने रैक्व नामक "पीठ खुजलाने वाले बैलगाड़ी वाले साधु" की महिमा जानी और उनकी शरण में जाकर ज्ञानयाचना की। साधु ने ज्ञान देने से मना कर दिया। तत्पश्चात् राजगुरुओं की सलाह से राजा पुनः वहां गए और भेंट के साथ अपनी पुत्री जाबाला को भी ले गए। जाबाला के सौंदर्य से प्रभावित हो रैक्व मान गए तथा उन्होंने राजा को ज्ञानवचन कहे जो कि छान्दोग्य उपनिषद में संकलित हैं।

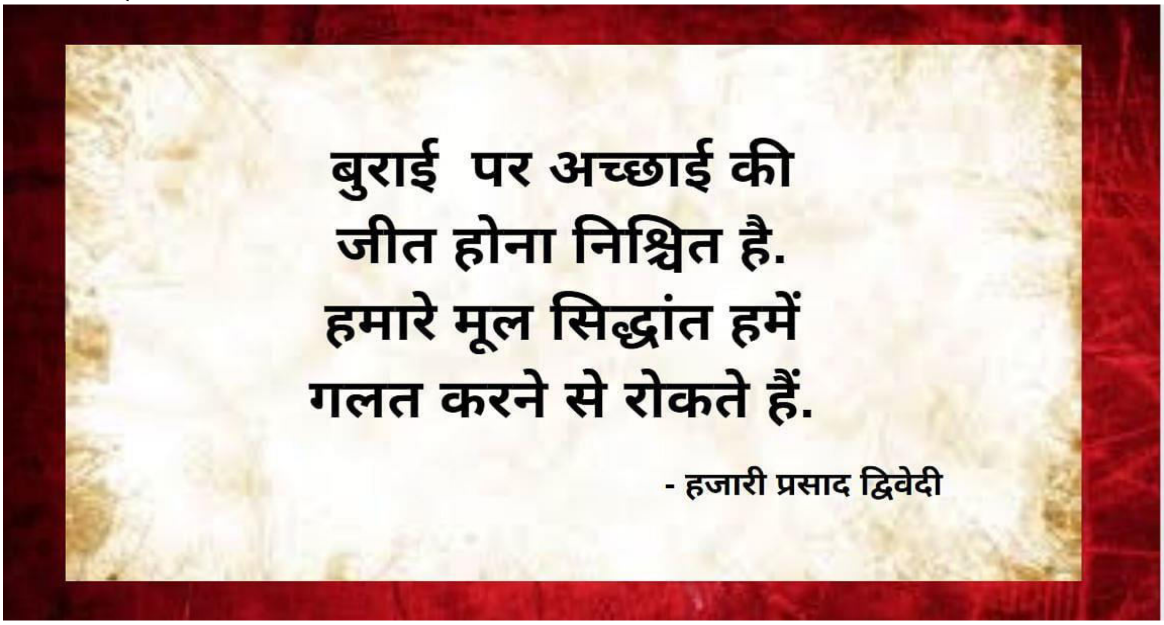

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 5.928|

| Volume 4, Issue 11, November 2021 |

|DOI:10.15680/IJMRSET.2021.0411008 |

लेखक प्रारंभ में यह कथा लिखते हुए अपनी आपत्ति जताते हैं कि इस कथा में कुछ अधूरा प्रतीत होता है।[3,4]

निष्कर्ष

अनामदास का पोथा आचार्य हज़ारी प्रसाद द्विवेदी[1] द्वारा लिखित एक उपन्यास है। इस उपन्यास में उपनिषदों की पृष्ठभूमि में चलती एक बहुत ही मासूम सी प्रेमकथा का वर्णन है। साथ ही साथ उपनिषदों की व्याख्या व समझने का प्रयास, मानव जीवन की विभिन्न परिस्थितियों में विचारों के मानसिक द्वंद्व व उनके उत्तर ढूंढने का प्रयास इस उपन्यास की महत्त्वपूर्ण विशेषताएँ व कहना चाहिए कि उपलब्धियाँ भी है।

इस उपन्यास में परिलक्षित लेखक का उपनिषद-ज्ञान व मानवीय मनोभावों को समझने की क्षमता व उनको अपनी कलम से सजीव कर देने की क्षमता निश्चित ही प्रशंसनीय है।

इस उपन्यास की पृष्ठभूमि छान्दोग्य उपनिषद में वर्णित कथा है जिसके अनुसार दो पक्षियों की वार्ता सुनकर राजा ने रैक्व नामक "पीठ खुजलाने वाले बैलगाड़ी वाले साधु" की महिमा जानी और उनकी शरण में जाकर ज्ञानयाचना की। साधु ने ज्ञान देने से मना कर दिया। तत्पश्चात् राजगुरुओं की सलाह से राजा पुनः वहां गए और भेंट के साथ अपनी पुत्री जाबाला को भी ले गए। जाबाला के सौंदर्य से प्रभावित हो रैक्व मान गए तथा उन्होंने राजा को ज्ञानवचन कहे जो कि छान्दोग्य उपनिषद में संकलित हैं।

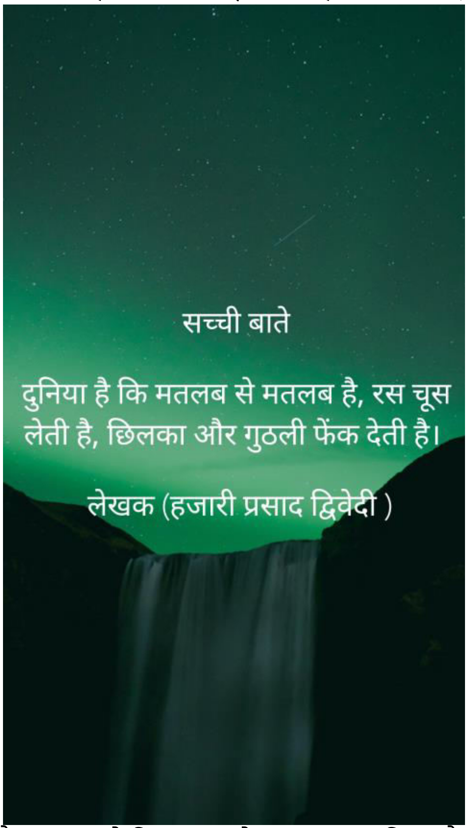

रैक्व जंगल में निवास करने वाला एक ऋषिपुत्र है, जिसकी माता की मृत्यु उसके जन्म के समय ही हो गयी थी। वेदों का कुछ ज्ञान प्रदान कर बाल्यकाल में ही उसके पिता भी चल बसे। पिता प्रदत्त ज्ञान से उत्पन्न जिज्ञासा को स्वानुभव से स्पष्ट करने की चेष्टा में जंगल में भटकता हुआ यह बालक किशोरावस्था में पहुंचते पहुंचते तक आसपास के गांवों में संन्यासी बालक के रूप में जाना जाने लगता है।

एक दिन एक भयानक तूफान आता है, जिसे देख बालक वायु तत्व को सर्वशक्तिमान मानने लगता है। तूफान थमने पर वह जंगल निकलता है। अहोभाव से वायुशक्ति से हुए विनाश का अवलोकन करते हुए उसे एक दुर्घटनाग्रस्त बैलगाड़ी दिखती है, जिसके पास ही दो मानव शरीर पड़े हैं। एक की मृत्यु हो चुकी है। लेकिन दूसरा, यह जीवित तो है लेकिन बेहोश है। लेकिन यह क्या .... यह तो कोई विचित्र प्राणी है - इतने सुंदर लंबे मुलायम केश, इतनी सुंदर इतनी बड़ी मृग सरीखी आंखें, इतना सुंदर मुख? नहीं नहीं यह मानव नहीं हो सकता अवश्य ही यह कोई देवलोक का प्राणी है। इतने में घायल राजकुमारी को होश आ जाता है।[4]

यहां से शुरु होती है बैलगाड़ी वाले ऋषिपुत्र की कथा, जिसकी पीठ में रह रह कर खुजली उठती है जो शांत ही नहीं होती, या यूं कहें कि कथा के अंत में ही शांत होती है।

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 5.928|

| Volume 4, Issue 11, November 2021 |

|DOI:10.15680/IJMRSET.2021.0411008 |

द्विवेदीजी का उपनयास मानवतावाद है। वह मानव समुदाय की ओर इंगित करता है। यह मानवतावाद मनुष्य में पुरूषार्थ तथा वैचारक चेतना को प्रोत्साहन देता है। मनुष्य जडता चेतन की ओर जाता है।
पशुत्व या जडत्व का परिहार ही मनुष्यत्व ईश्वर का श्रेष्ठ रूप है। उन्होंने अपने स्पष्ट विचार से बताया कि मनुष्य का स्वभाव ही उपर की ओर जाता है, वह एक माडजक प्राणी है। अतः मनुष्य में मनुष्यत्व एवं देवत्व रूप की अपेक्षा है। [5]

संदर्भ

1. "अनामदास का पोथा:हजारी प्रसाद द्विवेदी". गद्य कोश. मूल से 30 दिसंबर 2016 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 23 जनवरी 2017.
2. आचार्य द्विवेदी : गाँव में, Amara Bahādura Siṃha, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय
3. पत्र : हजारीप्रसाद द्विवेदी, Dwivedi, Hazariprasad, Mukunda Dvivedī, राजकमल प्रकाशन
4. हिन्दी साहित्यकी भूमिका / हजारीप्रसाद द्विवेदी, Dwivedi, Hazariprasad, हिन्दी-ग्रन्थ-रत्नाकर कार्यालय
5. उपन्यासकार आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी Singh, Tribhuvan, 1929-संजय प्रकाशन

INNO SPACE
SJIF Scientific Journal Impact Factor
Impact Factor: 5.928

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

निस्केयर
NISCAIR

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH

IN SCIENCE, ENGINEERING AND TECHNOLOGY

9710 583 466

9710 583 466

ijmrset@gmail.com

www.ijmrset.com